महिला मंडलः क्या और कैसे बनाएं?

सबला में समय-समय पर हम आपको महिला मंडलों की जानकारी देते रहे हैं। आप में से कई लोग अपने इलाकों में महिला मंडल शुरू करना चाहती होंगी। इसलिए इस अंक में हम महिला मंडल बनाने की पृष्ठभूमि, इनका पंजीकरण, संचालन आदि विषयों पर जानकारी दे रहे हैं। हम यह नहीं कहते कि आप यह रूपरेखा ज्यों कि त्यों ले लें, पर यह शुरुआत करने का एक तरीका हो सकता है। आप अपनी ज़रूरतों के हिसाब से इसमें फेरबदल कर सकतीं हैं।

महिला मंडल क्या है?

औरतों द्वारा औरतों के विकास और ज़रूरतों को ध्यान में रखकर बनाए गए समूह को महिला मंडल कहते हैं। महिला मंडल के उद्देश्य महिलाओं का विकास, उनमें जागरूकता लाना, शिक्षा, रोज़गार, समान अवसर मुहैया करने से लेकर अपने इलाके तथा गांव का विकास तक हो सकता है। महिला मंडल महिलाओं के लिए एक मंच देता है जहां वे अपनी कठिनाइयां, परेशानियां तथा दुख-दर्द बांट सकें। साथ ही औरतों के सामाजिक, आर्थिक विकास के लिए आपस में बैठकर विचार कर सकें। समाज में औरतों के दर्जे व भूमिका के बारे में औरतों में जागरूकता पैदा करने और उनके फैसले लेने की क्षमता को विकसित करना भी हो सकता है।

महिला मंडल के काम

महिला मंडल बनाने के बाद उसके उद्देश्य पूरे

करने के लिए कुछ काम शुरू करने पड़ते हैं। मोटे तौर पर मंडल के कार्य निम्न हो सकते हैं—

- महिलाओं और बच्चों का विकास।
- गांव में चल रहे विकास कार्यक्रमों में सहभाग।
- सामाजिक बुराइयों के प्रति जागरूकता और इन बुराइयों को दूर करने के लिए संघर्ष करना।
- दूसरे महिला मंडलों से सहयोग लेना और देना।

महिला मंडल को चलाने के लिए कुछ नियम बनाने ज़रूरी हैं। इन नियमों को तथा मंडल के उद्देश्यों को महिला मंडल का संविधान कहते हैं। संविधान के नियमों के अनुसार ही महिला मंडल चलाया जाता है। नियमों में सुधार करना हो तो सभी सदस्याओं की सहमति ज़रूरी होती है। इस संविधान को जब कानूनी मान्यता मिलती है तब महिला मंडल पंजीकृत होता है।

महिला मंडल का गठन

कोई भी सात महिलाएं इकट्ठी होकर मंडल शुरू कर सकती हैं। सदस्यों में एक दूसरे के प्रति विश्वास ही महिला मंडल की बुनियाद है। मंडल

पर उसकी सदस्याओं को छोड़कर किसी और का अधिकार या सत्ता नहीं होती। ऐसे संगठन को रजिस्ट्रार के कार्यालय से कानूनी मान्यता दिलाई जा सकती है।

संगठन चलाने के लिए एक 'प्रबंध समिति' ज़रूरी है। यह समिति मंडल के काम और हिसाब-किताब का लेखा-जोखा रखती है। इस समिति का चुनाव मंडल के सदस्य मिलजुल कर करते हैं। समिति के कार्यकर्ताओं का कार्यकाल मंडल की ज़रूरतों को ध्यान में रखकर किया जा सकता है। अच्छा हो अगर समिति की सदस्याओं का चुनाव हो। इससे एक तो लोकतांत्रिक प्रणाली को बढावा मिलता है। दूसरे, सदस्यों में सहयोग और नेतृत्व को बढ़ावा मिलता है। चुनाव के द्वारा सभी लोग अपनी पसंद और नापसंद ज़ाहिर कर सकते हैं। पर यह ज़रूरी है कि चुनाव होने के बाद सभी सदस्य पदाधिकारियों को पूरा सहयोग दें। क्योंकि महिला मंडल सभी महिलाओं का होता है, न कि किसी एक महिला का।

नए सदस्यों की भर्ती

महिला मंडल बनने के बाद अगर गांव की और औरतें इसमें शामिल होना चाहें तो यह सदस्यों की सहमति से हो सकता है। जो महिला जिस महीने से मंडल में आए उसी महीने का चंदा और उससे सदस्यता का शपथ पत्र भरवा लें। बस, अब यह औरत भी मंडल में शामिल हो गई।

सदस्यों की जिम्मेवारियां

- बैठक में भाग लेना।
- काम में सहयोग।
- प्रबंध समिति के साथ सहयोग करना।
- प्रबंध समिति की सलाह लेना और देना।
- हिसाब-किताब की जांच और देख-रेख।
- चुनाव में भागीदारी।

वैसे तो सभी जिम्मेवारियां तमाम समूह बांटता है। फिर भी कुछ कामों के लिए प्रधान, उपप्रधान, सचिव और खजांची बनाना ज़रूरी है।

प्रधान

महिला मंडल के सभी कामों के लिए प्रधान जिम्मेवार है। वह मंडल के बैठक की अध्यक्षता, मंडल को चलाना, सलाह-मश्वरा करके फैसले लेने आदि का काम करती है। वह सदस्यों की मुश्किलें समझकर दूर करती है। मंडल के रिकार्ड की देखभाल करती है।

उपप्रधान

- प्रधान की गैर हाजिरी में अध्यक्षता।
- हिसाब-किताब, रिकार्ड की देखरेख।
- कार्यक्रमों में सलाह।

सचिव

- कागजात की देखरेख।
- बैठकों की कार्यवाही का ब्यौरा।
- पत्र-व्यवहार।
- सामान की देखरेख।

खजांची

- सदस्यों से चंदा इकट्ठा करना।
- पैसे का हिसाब-किताब रखना।
- बैंक से लेन-देन का काम करना।
- आय-व्यय का विवरण देना।

इन सभी बातों को ध्यान में रखकर आप अपने इलाके में महिला मंडल की शुरुआत कर सकती हैं।

साभार: **'सूत्र'**

'सूत्र' संस्था का पता: जगजीतनगर, हिमाचल प्रदेश